श्रावण, १३७६ साल
जुलाइ, १९६९ ई०

मैथिली कविता

मैथिली कविता क प्रगतिशील त्रैमासिक

सम्पादक
नचिकेता

* कार्यालय *
१६२/८०, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता—४५

वार्षिक चन्दा-१ टाका
प्रति संख्या-३० पाइ

वर्ष—२
अंक—२

मैथिली क बहु प्रशंसित प्रकाशन

कवयो वदन्ति—(काव्य) नचिकेता....................	२.००
चोर—(नाटक) अनुवादक, प्रो० प्रबोध नारायण सिंह	१.००
हरिमोहन झा : व्यक्तित्व और कृतित्व—डा० प्रेमशंकर सिंह	६.००
विष-वृक्ष—अनुवादिका, प्रो० इला रानी सिंह	२.००
सलोमा— " " "	०.७५
प्रेम : एक कविता—" " "	०.७५
हाथी क दाँत—(नाटक) प्रो० प्रबोध नारायण सिंह...	०.५०
अन्हेर नगरी—(नाटिका) अनुवादक " "	०.५०
सोहर और खेलौना—डा० अणिमा सिंह	१.५०
कोहबर— " " "	१.००
समदाउन और उदासी— " "	१.००
शिशु गीत और खेल— " "	०.६०
स्वर्णिम छाया-(उपन्यास अनुवादिका डा० अणिमा सिंह	२.५०
मैथिली लोक-गीत—डा० प्रो० अणिमा सिंह	१५ ००

प्राप्ति स्थान : —

लोक साहित्य परिषद, १६२/८०, लेक गार्डेन्स,कलकत्ता-४५

श्रावण, १३७६ साल
जुलाइ, १९६९ ई०

मैथिली कविता

मैथिली कविता क प्रगतिशील त्रैमासिक

सम्पादक
नचिकेता

* कार्यालय *
१६२/८०, लेक गार्डेन्स,
कलकत्ता—४५

वार्षिक चन्दा-१ टाका
प्रति संख्या-३० पाइ

वर्ष—२
अंक—२

अनुक्रम......

तमाल

गगन वन क बिच तरु तमाल हे ! चतरि सघन घन सहृदय !
तबधल जे मन प्रान जगत केर जुड़ा जाउ छाहरि कय ॥
तपन ताप सँ उजड़ि उपरि कत विटप-शरण केर अर्थी ।
आकुल कंठ गोहारि रहल हे ! सुजन स्वजन-अन्वर्थी ॥

उमड़ि आउ घन धुनि सुनाउ,
पुनि घहरि घुमड़ि घन घोर ।
आश्वास क आशा - विश्वास
जगाउ, सहेजि सकोर ॥

कत दिन ग्रीष्म क उष्णता क ई चलत अचल उत्पाते ।
पड़त प्रचंड किरण मार्त्तण्ड क कते भूर आघाते ॥
दुसह पसाही दावानल क करत कत वन क निपाते ।
बहइत रहत की चिरकालहु धरि दुर्वह लूह बसाते ॥

अहह ! असह दुख देखि बारि दृग
बारिद ! बरसिअ बारि ।
अन्द निरन्द नभहु झुमि झमकिअ
तमकि तड़ित् तरुआरि ॥

बरिसओ बुन्द बान अविरत, डूबओ दिग् विदिग् अखंडे ।
आखंडल क धनुष टंकारे हो अखंड भूखंडे ॥
चमकओ तड़ित् खंग द्रुत गतिएँ पीत रक्त उद्दंडे ।
नील ढाल घन सघन घूमओ उद्वर्तित निज भुज-दंडे ॥

वज्री ! वज्र खसाउ, आउ
अरि - उर कम्पन निष्पात ।
करइत चिर-कठोर उद्धत गिरि
शिखर उपर अभिघात ॥

उमड़ि-घुमड़ि रस बरसि हरषि बनबिअ अहँ अवनी श्यामा ।
पुनि निरन्न परती कें धरती रचिय भूरि धन धामा ॥
सरसरि रेखा मात्र, भरिअ रस रंग प्रेम उद्दामा ।
मन मयूर कें नचबिय सजबिय वन कदम्ब अभिरामा ॥

रिक्त तिक्त ब्रज वन, कालिन्दी—
कूल न तूल ललाम ।
आबि आइ पुनि पुण्य श्याम घन !
बनबिअ ललित ललाम ॥

पुनि नभ वन मे मेघ क मेदुर द्रुम तमाल केर छाया ।
पुनि घर-आंगन गृह गोसाउनि क अनुगति गति तुअ पाया ॥
समय सीर पर वर्षण पुनि पर्जन्य धान्य धन धन्ये ।
पुनि मरु सिकता कण - कण सालव उर्वर शस्य अनन्दे ॥

गगन वन क पुनि द्रुत तमाल हे !
रचि दल नवल वितान ।
श्यामा अवनि श्याम घन अनुखन
रुचओ कलित कल्यान ॥

—प्रोफेसर श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

यंत्र-युग ओ समस्या मूलक बिधि निषेध

नीतिशास्त्रक झोरी मे दरक्का अछि बड़का टा
ताहि मे विवेकक पेओन आर चेफरी चाही
प्रश्न अछि यंत्रयुगक अपसेआँत मनुक्ख कें
की चाही की की नहि चाही

यंत्रयुगक अपसेआँत मनुक्ख कें
अहल भोरे चाही एक कप चाह
सभ तरि प्रोत्साहनक फोहारा
आ' अपन उपलब्धि पर खाली बाह-बाह

विचारक प्रवाह मे दुखिताह मोन कें
नहि चाही हुले ले ले अनेरे अनघोल
चालि मे मुदा लोंगी मिरचाइक तेजी
आ आङनवालीक मधुमिश्रित बोल

आजुक मनुक्ख कें नहि चाहिऐक प्रवचन
आ नहि चाहिऐक अगबे आदर्शक व्याख्यान
चाहिऐक ट्रैक्टर पचीस अश्व शक्ति वला
लहलहाइत खेत आर भरल खरिहान

आजुक मनुक्ख कें नहि चाहिऐक संतोष
नहि चाहिऐक अपना भैआरी मे मेल

मतलब हो केवल एहि दुनिआँ मे गृहिणी सँ
बेटा हो मैट्रिक अङरेजी मे फेल

व्यवस्था गनएबा काल बाप जेँ बादशाह
तेँ चाही पुष्ट क' टाका ओ कार
अपन कन्यादान मे वएह तोड़थि आफन
ठोकथि खन माथ आर पीटथि कपार

नहि चाहिऐक जीह पर लगाम कोनो व्यक्ति कें
ऊँच-नीच छोट-पैघ कथुक टा विचार
नहि चाहिऐक शिखा-सूत्र चानन सिन्दूर-ठोप
हर्ज की टेबुले पर लागि जाय सचार

चाही की पटु एहन कारीगर मिस्त्री
आओर इंजिनिअर हो एहन होसिआर
जे बैसि जाय ल' द' कए तिनमहला भव्य भवन
बिरड़ो-बसात मे उड़ि जाए चार

चाही की धन्धा मे कुशल एहन डाक्टर
जे आला लगबैत लिअए रोगी केर जान
चाही की तिकड़मक फराठी विज्ञान कें
छूबए लए जाइत छी जखन हम चान

चाही की अध्यापक फाँकी मरनिहार
पोथी सँ परहेजी आओर विद्वान
चाही की मिथ्या प्रतिष्ठाक मोटरी
आ' चाही की पल्लवग्राही पांडित्यक दान

चाही की धिया-पुता छुराबाज हीरो
जे बिनु टिकसे टहलि आबए देस ओ बिदेस
चाही की बस पर पाथर फेकनिहार
ड्रेन पाइप धारी बिनु कहल अगिलेस

यंत्रयुगक मानव अछि भूत सँ अज्ञात
वर्तमान ओकरा करैत छै हरान
टकटकी लगाय ओ भविष्य दिशि तकइत अछि
त्रस्त छै आत्मा आ' कुंठित छै ज्ञान

श्री गोपाल जी झा 'गोपेश' एम० ए०

●●

३० जनवरी : बलिदान क साँझ : आ एकटा कथा

एकटा संगीत
एकटा राग
एकटा आवाज
एकटा ज्योति
गुम भ' गेल।

एकटा दूधिया संस्कृति
एकटा शान्तिक अंकुर
एकटा अहिंसाक बीया
सूखि गेल।

एकटा नवधारा
एकटा नव हिमालय
एकटा नव महासागर
हटा लेल गेल

नेपथ्य सँ आब
वैह सिसकी
कारुणिक धुन
आ चीत्कार

'रघुपति राघव राजा राम
ईश्वर अल्ला तोहर नाम'

विश्व क आगाँ एकटा कारी परदा
इतिहासक दैत्य दोहरावैत अछि
चिर परिचित अट्टहास,
आय धरि।

—डा० बेचन

●●

कवि आ' कविता

कवि थिकाह स्रष्टा!
कविता थिक सृष्टि!!
पुनः बेरि बेरि हमरा मन मे
एकटा प्रश्न उठैत अछि—

केहन हो स्रष्टा; केहन सृष्टि ?
उत्तर एकर सेहो दर्पण जकाँ स्पष्ट अछि—
स्रष्टा हो एहन—जकर दृष्टि तीक्ष्ण,
तीव्र, सन्तुलित, प्रकाशमान,
सूर्य्यहुँ सँ अधिक प्रखर हो।
सृष्टि हो एहन—जे केवल
कल्पनाक नहि, किन्तु सत्य पर सेहो
आधारित हो; जकर उद्देश्य—
निर्माण, भ्रातृत्व, विकास, ज्ञान ओ सह-अस्तित्व हो !
कविता ओ सृष्टि मे—
कवि ओ विधाता मे, अभेद सम्बन्ध अछि।
तैं परिवर्तित परिस्थिति मे—
कविता क रचना होइछ—जीवनक हेतु आब !!

—डॉक्टर श्री परमेश्वर मिश्र, एम. ए. बी. एल. पी-एच. डी.

●●

जय जनम-भूमि सय सय प्रणाम

अय जनम भूमि सय सय प्रणाम
जानकी—जगत जननी क धाम
कोशी, कमला, सरि बागमती
लक्ष्मणा, गंडकी बेगवती
सलिला समूह छथि सेवि रहल
कलकल स्वर सँ सुनवति बिनती

सेवा करैत दिन राति रहथि
सुमिरण करैत से अहँक नाम
अय जनम भूमि सय सय प्रणाम

पद पद पर प्रकृति छटा छहरय
ल' सुरभि समीरण बहल करय
वन उपवन सब फल फूल भरल
फल फूलक होइत रहय संचय
जय जय कारक बहु विहग कुलक
कलरव क शंख रहि रहि बाजय
सुषमा सिङार कृत प्रकृति अहँक
ककरा नहिं लागय अति ललाम
अय जनम भूमि, शत शत प्रणाम

बारी बारी मे साग लगल
लत्ती सब जत' तत' पसरल
दाड़िम नेबो सब फुलति फरति
केराक बीट फल भार झुकल
शोभित फल पत लताम आम
फुलवारी विविध प्रसून सजल
डिह्वारक आगु क सांध्य दीप
मंदिर क शंख घंटा बाजल
मैथिल क निवास स्थल जनबय
लोक क स्वरूप नयनाभिराम
जय जनम भूमि सय सय प्रणाम

घर आंगन सब नीपल पोतल
तहि मे तुलसी चौरा ढेउरल

चौरा सभ मे तुलसी रोपल
पोसल पालल द' अछिजल
मँह मँह करैत चानन चोआ
पूजा अर्चा मे सरर पड़ल
सादा पहिरब ओढ़ब लोक क
हँस मुख मृदु वचन विनोद भरल
चानन सह सिनुरक ठोप कहय
मिथिला थिक महि पर देव धाम
अय जनम भूमि सय सय प्रणाम

मुनि याज्ञवल्क्य, गौतम महान
जे रहथि विविध विद्या निधान
भगवान राम तक विस्मित भए
रहलाह मौन लखि जनिक ज्ञान
नृप जनक सदेह विदेह विदित
जल जीवन गे सरसिज समान
जे गृही हैत रहला विरक्त
गार्हस्थ्य क रचि नव मूल्य-मान
से सब सन्तान अहीं क रहथि
अछि काल जयी बनि हुनक नाम
अय जनम भूमि सय सय प्रणाम

विद्या वारिधि उदयन मंडन
कवि कोविद बालक शंकर सन
नृप शिव महेश हरसिंह देव
विद्यापति पिक कविता कानन
निगमागम मे निष्णात बहुत

सन्तान भेल छथि गुण-ग्राम
अय जनम भूमि सय सय प्रणाम

भारती सरस्वतिये सदेह
लखिमारानी,—कविताक स्नेह
जनिकर, बनि विद्यापति क गान
आनन्दित राखथि गेह गेह
दुहिता अहाँक छथि भेल बहुत
विद्या विशारदा, धर्मधाम
अय जनम भूमि सय सय प्रणाम

बनि पुनि राजर्षि महर्षि प्रसू
जग गृह देवी बनि कए विलसू
तन सँ हम कतहु रही, मन मे
महिमा, ममतामयि,—अहीं बसू
मा मिथिले, बसल रहय दृग मे
छवि छटा अहँक ई अष्टयाम
अय जनम भूमि सय सय प्रणाम

—जय नारायण झा 'विनीत'

●●

उपराग

सभ किछु जनै छी, कहू की अहाँ कें ?

प्रथम आषाढ़ तन-मन कें कँपौलक,
कौआ कुचरि कए सन्देशो सुनौलक,
सद्यः कथा कोन ? सपनहुँ न अयलहुँ
सभ किछु जनै छी, कहू की अहाँ कें ?

बीतल सलौनी न सुधि घूरि लेलहुँ,
पल-पल तकैत पल अनन्तो गमयलहुँ
वर्षा बिगड़ि बाण बुन्नक चलाबय,
सभ किछु जनै छी कहू की अहाँ कें ?

फूलल कदम्ब अनुरागिनीक मोन सन,
झिंगुर बजैछ जेना पैजनी क रुन-झुन,
अवनिक खोंछि दूभि-धान अछि हरिहर,
सभ किछु जनै छी, कहू की अहाँ कें ?

चढ़ितहि शरद लक्ष्मी गाम आओति,
बिजुरीक कोरा मे खञ्जनि खेलाओति,
हम चातकी घोरि माहुर पियब की ?
सभ किछु जनै छी, कहू की अहाँ कें ?

इन्दू - तरेगन तकैते बाट, थाकलि,
ओझा पड़यला कनेक आँखि लागलि,
कतेको उलहन सुनै छी अहाँ प्रति,
सभ किछु जनै छी, कहू की अहाँ कें ?

बाबू कहै छथि जे ओझा प्रवासी,
लल्लूक मुहें बनै छी संन्यासी
"हमरा दुःखक नहि ओर" हम गबैछी
सभ किछु जनै छी, कहू की अहाँ कें?

प्रियतम प्रवासी प्रदेशहि भने छी,
हमहू बूझू बोझ साँसक लेने छी,
कतहु रहू तन समाङ नीके औ!
सभ किछु जनै छी, कहू की अहाँ कें?

—श्री उपेन्द्र दोषी

●●

अनुरोध

भारत भरि वीर करोड़ो जनता सूतल फोंफ कटइ अछि।
माइक आँचर फाड़ि रहल हा! लखितहुँ कात हटइ अछि॥

जीव कोना! नहि तकर कनेको वीरत्वक अछि ज्वाला।
वधू मात्र केर वक्ष लागि ओ गूँथय काम क माला॥
परम पातकी धन-पिशाच ओ भ्रष्ट जगत करवैये।
युग पुरुषक पुरुषार्थक पादप मे पावक लगबैये॥
पापी पुरुष मदन केर प्यासल नारि क थूक चटइ अछि।
माइक आँचर फाड़ि रहल हा! लखितहुँ कात हटइ अछि॥

तममय खोलि केवाड़ हियक घर सम्मति नैन खिला ले।
शिव-हरि केर लए अस्त्र-शस्त्र तों बन्दुक बम्म मिला ले॥

भाँजै ओ तलवार चकाचक खलदल मजा चिखा दे।
रे भारत केर वीर युवक! तों पुनि इतिहास लिखा दे॥
वीरे पुरुष, वीर पुरुषे केर शुचि इतिहास रटइ अछि।
माइक आँचर फाड़ि रहल हा! लखितहुँ कात हटइ अछि॥

ले' साहस केर ज्योति हाथ मे, जोड़ि 'अम्ब केर नाता'।
दौड़ै भारत बन्धु 'जाति सव', ठाढ़ि समर अछि माता॥
माया, ममता, स्वार्थ, पाप तजि पी 'ले' काल क हाला।
एकहि बेर अशान्ति मचा दे' लए जगत्राणक भाला॥
सीमा पर अछि ऐल मूढ़ ओ हिमगिरि हेतु सटइ अछि।
माइक आँचर फाड़ि रहल हा! लखितहुँ कात हटइ अछि॥

उठा इन्द्र केर बज्र, हिमालय, सागर, खल मथवा दे।
भूतल, अतल, वितल, नभतल कें एक राशि नथवा दे॥
देवासुर संग्राम मचा अरि-सैन्यक सिन्धु बहा ले।
उर्वी खूनक धार चकाचक वीरे! स्वयं नहा ले॥

वयस किशोरें मतल 'रमण' कवि अम्बक हेतु खटइ अछि।
माइक आँचर फाड़ि रहल हा! लखितहुँ कात हटइ अछि॥

—श्री फूलचन्द्र मिश्र "रमण"

परिवर्त्तन

आइ हिमालय क
सब सँ उँचका शिखर पर
माने एवरेस्ट पर

बसल महादेव
मस्त भांग नै पीसि रहल छथि।
विपन्ना गौरी ?
ओ त आइ बैसलि छथि,
अन्नहीना अन्नपूर्णा,
भ्रख मारैत अपन गरीबी पर
देखि शिव क गण सभक अलहनरैनी।
सामर्थ्य नहि छैन हुनका सभ कें
बड़द सँ बाध जोतवाक।
आर तँ,
जोड़ा बरद अछैतो,
परती पराँठ भेल छैन खेत।
बाड़ी मे भांग क गाछ अछैतो,
आइ घर उदास भेल छनि।
बिका रहल छनि गोसाउनिक शीरा
तथापि बम भोला फाटल दूध सन हँसी उड़ा रहल छथि।

गौरी, पार्वती, अन्नपूर्णा, माने शिव क प्रिया।

—श्री केदार नाथ झा, एम० ए०, साहित्यरत्न

●●

वैह नगरी

ई वंह नगरी थीक
जतय यौवनावस्था क प्रथम पग रखने छलहुँ;
तीव्र उत्कंठा छल प्राप्त करबाक !
जकरा समक्ष उत्सर्ग क अभिलाषा छल,
किन्तु निष्ठूर एवं स्वार्थी संसार
शिक्षा देलक,
परखबाक
प्रत्येक क दृष्टि सँ !
कल्पना और आशा क अतृप्ति
बढ़ि रहल अछि सुरसा जकाँ
संघर्षशील यौवन मे ।
उत्सुकता क भावना दबि जाइछ
और
सरलता विचारशीलता मे परिणत भ' जाइछ ।

—प्रो० डा० प्रेमशंकर सिंह

●●

प्रणाम

मातृवेदि पर स्वयं शीश के बलि देलक निष्काम रे
बिहँसि बिहँसि फाँसी के पहिरल विजयमाल अभिराम रे
कूदि पड़ल समरानल मे जा ओतहि लेल विश्राम रे
पावन - परम-चरण बलिदानी शत - शत हमर प्रणाम ले ॥

फूकल जे पहिनहि रण भेरी मुखरित कैल देश आक्रोश
धमनी धमनी धधा उठल छल फड़कल शिरा-शिरा मे जोश
सुनितहि सिंहनाद रिपुगण के धड़कल उर किछु रहल न होश
बच्चा बच्चा बमकि उठल छल उत्तर द' देबा लए ठोस
मंगल पांडे! भारत भू पर अमर सतत तुअ नाम रे॥

वीर शिरोमणि अमर कुमर सन जखनि - प्रतिज्ञा ठानल छल
वीर ताँतिया के अन्तस्तल मे कुर्बानी सानल छल
वृद्ध बहादुर शाह वीर नाना के वाणी मानल छल
वीर वधूटी झाँसी रानी केर भवानी जागल छल
जे निज सरबस आहुति देलक अद्भुत होता नाम रे॥

मातृभाल के तिलक ललित रे, वीर शिरोमणि अमर सुभाष।
तोहरे स्मृति मे युवा-वृन्द अछि एखनहुँ धरि पा रहल प्रकाश
कठिन तपस्या तोहरे छल ओ जकरा बल जय-जय उल्लास
जय प्रतीक राष्ट्र क झंडा सँ मुखरित दिशा - दिशा आकास
तों मुक्ति - युद्ध - आधार - शिला! तों अवतारी बलराम रे॥

माता के लज्जा लाजपते! हे विपिन पाल! मा दुख-भंजन!
हे मातृ - नयन - मोती मोती! मा के चितरंजन चितरंजन
अरविन्द! महासुत जननी के, रे उधमसिंह ओ डायर-मर्दन!
देशक चूड़ा-मणि महामना हे मालवीय मदन मोहन
एक एक अविचल सेनानी महापुरुष बलधाम रे॥

रे भगतसिंह बिस्मिल दिनेश रे जलियाँवाला वीर मदन
चन्द्रमा चन्द्रशेखर यतीन रे, राजेन्द्र योगेन्द्र सदन,
वृद्धा मातंगिनि वीर अनुपमा खुदीराम अरिदल-मर्दन
रे सूर्यसेन रघुनाथ सप्त पटना सचिवालय के गर्जन

रक्ताक्षर मे जाज्वल्यमान तुअ एक एक केर नाम रे
तोहरे रक्ते सिक्त आइ धरि जननी क आर्द्र ह्रद्धाम रे॥

देश क वलिदानी अमर वीर कें भावी पीढ़ी की जानि सकल।
ई एक एक मा के सपूत! के हिनक मूल्य अनुमानि सकल॥
एक-एक युग के दधीचि, भालक तिलक ललाम रे!

—गोविन्द झा

●●

जय विद्यापति

जय विद्यापति, कविवर महान् !
जय काव्य - व्योम - विधु - विमल किरण,
जय काव्य - सिन्धु शुचि दिव्य रतन,
जय काव्य - सुधा - रस रसिक रमण,
जय काव्य - कमल - रवि, कवि सुजान।
जय विद्यापति कविवर महान॥

जय मिथिला - भाषा - भाग्य - भूप
जय मिथिला - मंगल - मुद अनूप
जय मिथिला - मण्डल मिहिर रूप
जय मैथिल कोकिल, कलावान्।
जय विद्यापति, कविवर महान॥

जय "कवि - रञ्जन" "कवि कण्ठ - हार"
जय "अभिनव जयदेवावतार"

जय "कवि शेखर", कोविद अपार,
जय "कवि पञ्चानन", "दशावधान"।
जय विद्यापति, कविवर महान ॥

जय अखिल विश्व विख्यात नाम
जय सरल सुकवि, श्री भक्ति - धाम,
जय अमल चरण, शत - शत प्रणाम,
जय सरस महाकवि, कीर्तिमान।
जय विद्यापति कविवर महान ॥

—श्री जगन्नारायण काव्याचार्य (त्रय), साहित्यरत्न

●●

अपनो आँखियें देखत

ई पथ······
चलि गेल अछि बसुन्धरा सँ
होइत दूर - दुरन्त तक,
सब मनुक्ख क मन क ऊपर दने
हृदय क अन्तहीन अनन्त मे।
पृथ्वी पर कतेक पथ अछि,
कत्तेक मनुक्ख अछि—
कत्तेक विस्तृत आकाश !
किन्तु ई पथ अनेक नहि एक अछि,
निराशा मे टिमटिमाइत दीप सन।
आशाहीन पृथ्वी कें बाट देखैबाक लेल,

महासूर्य क आलोक अछि
आर तँ बढ़ैत छी उत्साहक सम्बल लए
हतोत्साह कियैक हैब ?

पथ क दुहू कात---
चिक्कन चुनमुन,
हरियर - पीयर
झाड़ी आ' फूल - पात,
फूल क लहलहाइत झाबा
वन - उपवन······
भय कथीक ?

आन्हर शिशु क संग
माइ अगुऐलो ओही पथ पर
कियैक ?
विश्वास छन्हि
एही पथ पर आँखि खुजतैक
माइ क आँखिये आइ जें देखैत अछि
कालिह अपनो आँखियें देखत।

—श्री गोपाल दास

●●

राति जखन माति गेल

राति जखन माति गेल,
आँखि केर तारा ओकर
आँखिये मे झँपि गेल।
वधू टटको मधु भेल,

माछी ओकर उड़ि गेल,
राति जखन माति गेल।
भावना करैत देरी
लग मे आबि गेल
जेमिनी एगारह।
चन्द्रमा पर गेलहुँ,
भेल कतय एलहुँ।
लाख बर धरती हमर
चन्ना सँ नीक अछि।
तगरक फूल ओ
ई पुण्डरीक अछि।
आर किछु फुरैत मुदा
घंटा पड़ल बारह।
कतेक खुशी भेल
राति जखन माति गेल।
दिन भरि क दौड़-धूप,
चिता-चिन्ता क स्तूप
कालिदास क काव्य भेल
राति जखन माति गेल।
गिरगिट क टिक्-टिक्
विद्यापति क टेक भेल।
ठिठरा क ठरर मे
संगीत आबि गेल
राति जखन माति गेल।

—डा० हरिमोहन मिश्र

[मायाकोवस्की छथि रूसी भाषा क अन्यतम श्रेष्ठ कवि, उपस्थापित कविता क माध्यमे हुनक लेखनी क एकटा वैशिष्ट्य परिस्फुटित होइछ। शब्द क सीमित प्रयोग, भाव क गम्भीरता आ' सहज सरल भाषा अछि हुनक परिचय।]

॥ १ ॥

जानैत छी आन सभक हृदय कतय रहैछ—
वक्ष मे, जे कि सब क्यो जानैछ
किन्तु हमर रचना करैत काल
प्रकृति पागल भ' गेल छल।
केवल हृदय छी हम
स्पन्दित पैर सँ माथ धरि।

—मायाकोवस्की

[illegible]

अनुवादक—नचिकेता

॥ २ ॥

सर्वदा चमकू,
सर्वत्र चमकू।
अन्तिम साँस धरि
चमकैत रहू।
इयैह आदर्श अछि हमर
आ' सूर्यक।

—मायाकोवस्की

●●

[रायनर मारिया रिल्के छथि प्रसिद्ध जर्मन कवि। हमर पाठकवर्ग सँ हिनक परिचय गत अंके मे भेल अछि। तैं नव परिचय क प्रयोजन नहि। परिचय कें दृढ़तर करबा क विचार सँ हिनक कविता 'विवर्ण' मैथिल पाठक कें उपहार द' रहल छी।]

विवर्ण

मृत्यु क दुआरि सँ कनिये-टा-लेल घुरि आबि
ओ पहिरि लेलन्हि आपन दस्ताना आ' टोपी
हुनक वक्ष क गिरि - गुहो सँ एकटा सौरभ
स्थान-च्युत करैछ आन किछु कें,
जे वस्तु दैने छल हुनका सर्वाधिक
आत्म - सचेतनता।
बहुत दिन सँ ओ पुछनाइ छोड़ि देलन्हि,
जें ओ के छथि (: एकटा दूरत्वव्यंजक सम्पर्क),
आ' डूबल छथि समस्त दिन
चन्ता मे
एवं सयत्न बना रहल छथि एकटा उद्विग्न घर।
कारण, भ' सकैछ; एकटा अपरिवर्त्तिता कन्या
एखनहु बैसल होथि ओतय।

—रायनर मारिया रिल्के

[किछु फ्रेंच कविता 'मैथिली कविता' क पूर्ववर्त्ती अंक सब मे प्रकाशित भए पाठक लोकनिक चित्त कें मोहित क' लेने छल। पाठकवर्गहिक अनुरोध सँ किछु आरो फ्रेंच कविता छापि रहल छी। एहि कविता क रचयिता छथि सुकवि पीयेर रोबर्दी।]

एक फ्रेंच कविता

पृथ्वी हमरा लेखे कारागार अछि—
जखन हम प्रिया सँ दूर रहैत छी।
शून्य आकाश मे प्रेम, स्वाधीनता आ' क्षितिज रेखा सब,
अहाँ बहुत दूर नहि छी।
अन्तर्दाह सँ फोंका पड़ल धरणी पर
मरण क अंगजात कटु अनुभव कें
एक चेहरा प्रकाश आ' उष्णतो दैत अछि।
ओहि मुख सँ
ओहि मुद्रा आ' स्वर सँ,
केवल हमही संलाप करैत छी।
हमर हृदय काँपैछ आ' प्रतिध्वनित हैछ।
राति क परिचीत प्राचीर क भीतर—
आगि क एकटा यवनिका,
सुकुमार दीपक,
घनीभूत नीरवता क प्रमुदित वृत्त,
सुदीप्त विचार सब
खेद,
काल क ई समस्त ध्वंसावशेष
अग्नि मे विदीर्ण एक योजना,

एक और वंचित काज।
मुमूर्षु मनुज सँ प्रार्थना क बहुत कम अंश शेष रहि गेल अछि;

—पीयेर रोवर्दी

●●

[आरो एकटा फ्रेंच कविता उपस्थित अछि अपनेक सन्मुख। रचयिता छथि विदग्ध कवि मोर्भिलिये—फ्रेंच काव्य जगतक सुपठित, सुचर्चित आ' सुपरिचित कवि। हास्य क माध्यमे निष्ठुर सत्य क प्रति कठोर व्यंग्य अछि हिनक वैशिष्ट्य।]

अभूतपूर्व बियाह—एकटा कथोपकथन

बियाह करब ?
—हम स्वाधीन रह' चाहैत छी।
हम एकटा सम्बन्ध लाबि सकैत छी।
—ओह! भगवान हमर रक्षा करथु।
ओ एतेक भद्र छथि, अहाँ कें अवश्य प्रसन्न करतीह।
—सबटा गप्प।
उमर पन्द्रहे।
—फिजूल बात।
आ' अत्यन्त रसिका।
—दूर जाओक भोगी।
और एत्तेक हिसाबी।
—बेकारक बात।
खूब सुन्नर!

—आह ! हमरा जूनि सुनाउ।
बहु-चर्चित ।
एकटा फूसि।
दर्शन मात्र सँ प्रेम भ' जायत ।
—ईर्ष्यान्वित छी की ?
आ' बुद्धिमती सेहो ।
—तब त हमरा बकलेल बुझतीह ।
मुदा सोचि-विचारि कए त देखू,
मात्र गहने लेल एक लाख टाका भेंटत ।
—औंय !!! से त दोसर बात। तखन त
आइये हम बियाह करब ।

—मौभिलियै

●●

[आब जापानी कविता। 'होक्कू' विधा क जापानी कविता मैथिली कविता क द्वितीय अंक मे प्रकाशित भेल छल। आब प्रस्तुत अछि 'मान्यो शू' संकलनक कवि राजकुमारी दाइहाकू (सप्तम शताब्दि) क एकटा कविता।]

अहाँ कोना कए
वसंत पर्वत क लंघन क' सकब
एसगरे ?
हम दुहुँक एक संग भेला उत्तरो
जे कि एतेक कष्टसाध्य भेल छल ?

—राजकुमारी दाइहाकू

[द्वितीय जापानी कविता अछि 'कोकिन् शू' संकलनक कवि 'ओनोनो कोमाची' (८३४-८८०) क एकटा सुन्दर कविता। कोमाची रहथि आपन काल क विख्यात कवि।]

बाहर कोनो चेन्ह बिना रखनहि
जे वस्तु मुरझा जाइछ,
ओ अछि एहि पृथ्वी क
मानव-हृदय क
फूल।

—ओनोनो कोमाची

●●

[आब ग्रीक कविता क किछु परिचय प्राप्त करू। प्रथम कविता क कवि छथि 'लूसियस भैलेरियस मार्शल्स'। हिनक कविता मे आधुनिकता क प्रति तीव्र व्यंग्य समुपस्थित छन्हि।]

नकली

ओ जे स्वर्णिम केश पहिरैत छथि,
से हुनके थिकन्हि तकर के अविश्वास क' सकैत छल ?
ओ किरिया खाइत छथि, आ' साँचे खाइत छलीह;
यद्यपि हम जानैत छी—
ओ कतय सँ केश किनने छलीह।

—लूसियस भैलेरियस मार्शल्स

[एहि सँ पूर्व अंग्रेजी क मूर्धन्य कबि रॉबर्ट ब्राउनिंग (१८१२—१८८६) क परिचय मैथिली क पाठक वर्ग कें भेंटल छन्हि। एतय हिनक आरो एकटा प्रेमक कविता 'समम बोनम' प्रस्तुत अछि।]

समम बोनम

एकटा वर्ष क सबटा साँस आ' सौरभ
एकटा भ्रमर क थैला मे,
एकटा खनि क समग्र विस्मय आ' सम्पद्
एकटा मुक्ता क हृदय मे;
एकटा मणि क कोरा मे सागर कें
सबटा छाया आ' उज्ज्वलता।

साँस आ' सौरभ, छाया आ' उज्ज्वलता,—
विस्मय आ' सम्पद्, आ'—

कत्तेक ऊपर ताहि सब सँ—
सत्य, जे कि मुक्ता सँ अधिक उज्ज्वल,
सत्य जे कि मणियो सँ पवित्र,
एहि पृथ्वी क सर्वोज्ज्वल सत्य, सर्वाधिक विश्वास
हमरा लखे छल—
एक कन्या क चुम्बन।

—रॉबर्ट ब्राउनिंग

[अन्त मे चीनी कविता। अहाँ मरब' शीर्षक कविता आइ सँ प्रायः २४६६ वर्ष पूर्वक, महात्मा 'कनफ्यूशियस' क 'शि किं' नामक धर्मग्रन्थ सँ लेल गेल अछि। चीनी भाषा क एहि पुस्तक क आवेदन आइयो धरि स्वीकृत अछि। कनफ्यूशियस एहि पुस्तक क माध्यमे ओपन शिष्यवर्ग कें शिक्षा देने छलाह।]

अहाँ मरब

अहाँ क पास कोट आ' अंगा अछि,
मुदा अहाँ तकरा पहिरैत नहि छी;
अहाँ कें रथ आ' घोड़ा अछि,
किन्तु अहाँ ताहि पर चढ़ैत नहि छी।
धीरे-धीरे अहाँ मरब
आ' आन क्यो तकर उपभोग करत।

अहाँ क पास सभागृह आ' मकान अछि,
किन्तु तकरा परिच्छन्न नहि रखैत छी;
अहाँ कें घंटी आ' ढोल अछि,
किन्तु तकरा बजाओल नहि जाइछ।
धीरे-धीरे अहाँ मरब,
आ' आन क्यो तकरा पर अधिकार करत।

अहाँ कें मद्य आ' खाद्य अछि,
तब कियैक नहि अहाँ रोज बजबैत छी बाँसुरी,
जाहि सँ अहाँ अपना कें उपभोग मे लगा सकी
आ' आयुकाल बढ़ा सकी ?
धीरे-धीरे अहाँ मरब,
आ' आन क्यो अहाँ क स्थान ग्रहण करत।

—कनफ्यूशियस

आजु क युग मे पृथ्वी क समस्त उन्नत भाषा मे कविता-विधा पर सुचिन्तित मनन क ज्वार आयल अछि। स्वभावतः अपन डेरा क चारू कात विचार-विश्लेषण क प्रवणता देखि मन क भीतर सँ जेना केओ प्रश्न क' उठल अछि—'की औ! माँगक पूर्त्ति क लेल त खूब नाचैत कूदैत छी; आन सभ भाषा क संग एकहि पाँति मे लड़ू. खैबाक लेल जिद्दाजिद्दी क' रहल छी; मुदा आन सभक तुलना मे कैने की छी?' साँचे, एखन समय आयल अछि पाछाँ घूमि कए देखबाक जे हम सब की कैने छी आ' कतबा दूर काज क' रहल छी। अपने सँ पुछलहुँ। उत्तर भेंटल—किछु नहि। तैं किछु दिन सँ बात बनौनाइ छोड़ि ठोस किछु करबाक आकांक्षा अनुभव क' रहल छी।

हमरा सँ पूर्व कतेको प्राज्ञ, साहित्यिक आ' कवि-चूड़ामणि प्राचीन छन्दोबद्ध काव्य-रीति पर मूल्यवान विचार प्रकट कैने छथि, किन्तु आइ मुक्तक छन्द क जे नव तरंग-प्लावन आयल अछि तकर अध्ययन, चिन्तन एवं मनन हमर साहित्य मे बहुलांशतः अनादृत रहि गेल अछि। तैं हम एहि विषय पर किछ आलोकपात कर' चाहैत छी।

जन्म सँ पूर्वहि किछु प्राचीन-पन्थी कवि आधुनिक मुक्तक कविता क प्रति तीव्र विरोधिता प्रकट कैने छलथिन्ह। ई विरोध छल समस्त भाषा क आधुनिक निश्छन्द कविता क प्रति अनास्था क मनोभाव क परिचिति। कोलरिज धरि कहने रहथि—There may be, is and ought to be an essential difference between the language of prose and metrical composition. रवीन्द्रनाथो छन्द कें काव्य-देवी क अविच्छेद्य अलंकार बुझैत छलथिन्ह। एहि विषय मे रवीन्द्रनाथ कहने रहथि: "छन्द क एकटा अनिवार्य प्रवाह अछि, ओहि प्रवाह क मध्य एक बेर गिरा देला सँ कविता सहजहि नाचैत-नाचैत भासल चलल जाइछ···।"

किन्तु छन्द क जादूगर भैयो कए Wordsworth कहने रहथि—There neither is, nor can be any essential difference between the language of prose and metrical composition.

विंश शतक क प्रारम्भहि सँ अंग्रेजी साहित्य क ख्यातनामा कैक कवि गद्य-छन्द कें भाव-वाहन क एक मात्र उपयोगी छन्द रूपें स्वीकार क' लेने रहथि। परवर्त्ती युग मे Walt Whitman क अग्नि-गर्भ और प्रचण्ड विक्षोभमय हृदयानुभूति आत्मप्रकाश कैलक अछि मुक्तक छन्द में। तकर पहिने धरि मात्र नवीनत्व क प्रति आग्रह एहि नवीन छन्द-प्रवर्त्तन क एकटा कारण रूपें चिह्नित कैल जा सकैछ। वस्तुतः सामाजिक, आर्थिक और नैतिक दुर्दिन मे जखन कि व्यक्ति-जीवन क वेदना क वाष्प सँ समाज-जीवन विषवत् भ' उठल छल, तखन जीवन-नदी क ढहल किनारा पर बैसि नवीन युगक कवि छन्दक मध्य देखलन्हि आत्म-प्रतिच्छवि। युगबोधक परि-वर्त्तनक संग स्वर मिलो कए रवीन्द्रनाथो कें तैं अन्ततोगत्वा कहै पड़लन्हि—"एक दिन काव्य लिखनाइ शुरू कैलहुँ पद्य मे, तखन ओहि महल मे गद्यक हँकार नहि पहुँचल छल। आइ हम अपन वेला क समाप्ति-काल में देखैत छी, कखन सँ अज्ञातहि मे गद्य-पद्य क समझौता चलि रहल अछि। तैं चलि जैबाक पहिनहि तकर राजीनामा मे हमहूँ एकटा सही देलहुँ अछि।" आइ ई पद्धति अति स्वाभाविक रूपें स्वीकृत भए प्रयुक्त भ' रहल अछि! एतय बिचारबा क विषय ई अछि जे एहि सँ छन्दक महिमा क ह्रास भेलैक वा अभिवर्द्धन।



MAITHILI KAVITA : July, '69.
[Registered with Govt. of India under R. N. 16549/67]

मैथिली कविता क विवरण

१. प्रकाशन स्थल— कलकत्ता

२. प्रकाशन अवधि— त्रैमासिक

३. मुद्रक क नाम— श्रीमती इला रानी सिंह
राष्ट्रीयता— भारतीय
पता— १६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५

४. प्रकाशक क नाम— श्रीमती इला रानी सिंह
राष्ट्रीयता— भारतीय
पता— १६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५

५. सम्पादक क नाम— नचिकेता
राष्ट्रीयता— भारतीय
पता— १६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५

६. स्वत्वाधिकारिणी क नाम— श्रीमती इला रानी सिंह
राष्ट्रीयता— भारतीय
पता— १६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५

हम, श्रीमती इला रानी सिंह घोषणा करैत छी जे उपर्युक्त विवरण हमर जानकारी एवं विश्वास क अनुसार पूर्णतः सत्य अछि।

स्वाक्षर—इला रानी सिंह

प्रो० इला रानी सिंह द्वारा सिंह प्रेस, १६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५ सँ मुद्रित तथा प्रकाशित।